पाठ–छै

परमेश्वर मुझसे कैसे बात कर सकता है?

...मैंने कभी वास्तव में उसे सुना ही नहीं।

''जाओ, और किसी भी अशुद्ध वस्तु को मत छुओ।'' यह आग्रहपूर्ण वाणी थी, इसमें अधिकार था, यह कायल करने वाली थी। मैनुएल ने जब यह वाणी सुनी तो वह अपने घर की ओर जा रहा था। एक व्यवसाय में वह एक ऊँचे पद पर काम करता था जिसमें उसकी आय भी अधिक थी, परन्तु यह सब परमेश्वर को आदर नहीं देता था। उस वाणी ने उसके विचारों को झकझोर दिया क्योंकि यह वास्तविक थी। मैनुएल को मालूम था कि कोई उससे बोल रहा था, परन्तु उसे इस बात का निश्चय नहीं हो पा रहा था कि वह इस वाणी को अपने कानों से सुन रहा था अथवा अपने हृदय से। कहीं पहिले भी उसने इन शब्दों को सुना था।

मैनुएल एक मसीही परिवार में बड़ा हुआ था और उसे याद था कि जब वह एक छोटा लड़का था तब बाइबल की कक्षाओं में जाया करता था उसके भाई और बहिन प्रभु की सेवा में लग गए परन्तु मैनुएल अपना जीवन आरंभ करने से पूर्व एक ''अच्छी ज़िन्दगी'' जीने की ओर आकर्षित हो गया था जहाँ ढेर सा रुपया मिले, बड़ा सा मकान हो तथा अन्य सुख-सुविधाओं का सामान हो। अतः परिवार के अन्य सदस्यों से उसने एक भिन्न दिशा चुनी। उसने अपने विवेक को इस तरह वश में किया कि उसके जीवन में उसका विवेक परेशान न करने पाए। वह जवान था,

उसके लक्ष्य निर्धारित थे और वह "सफलता" के मार्ग पर अग्रसर था। तब यह वाणी सुनाई दी। **यह वाणी कहाँ से आ रही थी? कौन बोल रहा था?** उसने स्वयं से पूछा।

जब मैनुएल ने यह वाणी सुनी तो उसे एक बात का तो निश्चय हो गया; यह वाणी परमेश्वर ही की वाणी थी। उसे बाइबल की कहानियों के शब्द याद आ गए, परन्तु यह किसी यादगार से बढ़कर अनुभव था। वह अपने घर जाते हुए बीच रास्ते में ही रुक गया, अपने सोच-विचार को परमेश्वर की ओर लगाया और अपने जीवन के समर्पण की भावना से उस वाणी का उत्तर दिया।

परमेश्वर बोलता है। उसे सुना जा सकता है। कभी-कभी उसकी वाणी ठीक मैनुएल के अनुभव के रूप में "सुनाई देती है"; कभी-कभी यह भिन्न रूप में सुनाई देती है। यह पाठ आपकी यह खोज करने में सहायता करेगा कि परमेश्वर आपसे कैसे बात करता (बोलता) है।

इस पाठ में आप सीखेंगे...

- परमेश्वर के बात करने के ढंग या तरीके
- कोई कोई परमेश्वर की वाणी क्यों नहीं सुनता उसके कारण
- परमेश्वर बात करेगा इसका आश्वासन

यह पाठ आपकी सहायता करेगा...

- उन तमाम तरीकों का वर्णन करना जिनके द्वारा परमेश्वर हमसे बोलता है।
- क्यों कुछ लोग परमेश्वर को उनसे बात करते हुए नहीं सुन पाते हैं, इस बात को समझाना।
- इस बात का आश्वासन प्राप्त करना कि परमेश्वर आपसे बोलेगा।

हमसे बात करने के परमेश्वर के तरीके

विषयवस्तु 1. उन विभिन्न तरीकों के उदाहरणों को पहचानना जिन्हें परमेश्वर हमसे बात करने के लिए प्रयोग में लाता है।

कुछ लोग अपना बहुत सारा समय चिन्ता करने में बिता देते हैं कि क्या परमेश्वर मुझसे बात करेगा? वह कैसे बात करेगा? ऐसे प्रश्न लोग अक्सर अपने आप से किया करते हैं। यह एक दिलचस्प बात है कि परमेश्वर, जिसने हमें बनाया और हमें सुनने और बोलने की योग्यता दी; उसके बारे में हम सोचा करते हैं कि क्या वह स्वयं से बात कर सकता है! परन्तु परमेश्वर बात करता है। उसने ऐसे तमाम तरीके चुने हैं कि वह हमसे बोले, बात करे और अपनी बात बताए।

परमेश्वर बाइबल के द्वारा बोलता है

परमेश्वर ने हमसे बात करने का प्राथमिक तरीका अपना लिखित वचन, अर्थात् बाइबल को चुना। यह तो असंभव सा प्रतीत

होता है कि जो पुस्तक लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व लिखी जा चुकी थी क्या वह व्यक्ति विशेष से उसके लिए परमेश्वर की योजना के बारे में बात कर सकती है। परन्तु बाइबल एक पुस्तक से कहीं बढ़कर है। यह तो स्वयं परमेश्वर की ओर से हमारे लिए सन्देश है। यह सत्य हमें आश्वस्त करता है कि वह हमसे बात कर सकती है और हम इसे समझ भी सकते हैं।

पवित्र आत्मा की प्रेरणा से बाइबल लिखी गई। पवित्र आत्मा त्रिएकत्व का तीसरा व्यक्ति है। यह ठीक पिता परमेश्वर तथा पुत्र परमेश्वर के सदृश्य परमेश्वर है। जो विशेषताएँ और गुण पिता व पुत्र में हैं वही इसमें भी हैं, इसमें सम्पूर्ण ज्ञान भी सम्मिलित है। वह प्रत्येक बात को जानता है। वह वर्तमान को जानता है, वह भूतकाल को भी जानता है। वह भविष्य को भी जानता है। यह आपको तब से जानता है जब आप पैदा भी नहीं हुए थे, बल्कि आपके माता-पिता के बनने से पूर्व अथवा जब किसी का अस्तित्व ही नहीं था तब से जानता है।

वह बाइबल का लेखक है। उसने इसके लिखे जाने की प्रेरणा दी व मार्गदर्शन किया। उसने इसके प्रमाणिक होने का निश्चय स्थापित किया (2 पतरस 1:19-21)। यह मनुष्य जाति के लिए परमेश्वर की योजना का प्रकाशन है। न केवल उद्धार पाने के लिए यह आपकी अगुवाई करता है, परन्तु यह आगे अगुवाई करने में भी पूर्ण सक्षम है। पवित्र आत्मा ने बाइबल में वह सब रखा है जो आपको एक सफल मसीही जीवन जीने के लिए आवश्यक है।

आपके लिए कार्य

1 अपनी बाइबल में से 2 तीमुथियुस 3:16-17 पढ़िए और अपनी नोटबुक में इस प्रश्न का उत्तर लिखिए : परमेश्वर के

जन अथवा जो व्यक्ति परमेश्वर की सेवा करता है उसकी पवित्रशास्त्र किस प्रकार सहायता करता है?

पवित्रशास्त्र का आश्चर्यकर्म केवल इस बात में नहीं कि वह कैसे लिखा गया था, परन्तु इस बात में भी है कि वह किस प्रकार समझा गया क्योंकि पवित्र आत्मा आज भी जीवित और विद्यमान है। वही तो बाइबल लेखक का कर्ता था और वही इसको समझाने का कर्ता है।

पाठ दो में सीखे कुछ पवित्रशास्त्र के सन्दर्भों के विषय में विचार कीजिए–जिनमें यह आश्वासन दिया गया है कि पवित्र आत्मा हमारी अगुवाई करने में सक्षम है। उदाहरण के लिए, यूहन्ना 14 तथा 16 में मसीह की उस शिक्षा का स्मरण कीजिए जहाँ सहायक अथवा सान्तवनादाता–पवित्र.आत्मा–के आने के विषय कहा गया (यूहन्ना 14:16; 16:12-15)। रोमियों 8:26-27 में दिए गए आश्वासन को स्मरण रखिए कि पवित्र आत्मा परमेश्वर के मन की बातें जानता है, और वह हमारी प्रार्थना की अगुवाई करेगा। मसीह ने तो यहाँ तक कहा कि पवित्र आत्मा उसकी शिक्षाओं को हमारे मन में बैठाएगा (यूहन्ना 14:26)। पवित्र आत्मा यह कैसे करता है? वचन के द्वारा, जिसका लेखक वह स्वयं है?

क्या कभी आपने पवित्रशास्त्र को पढ़ा और महसूस किया कि किसी पद या परिच्छेद ने आपको कचोटा है? हाँ, वह आपसे बोला और आपकी आवश्यकता को समझने में सहायता की, जिसे समझ पाना या उसका हल ढूँढ़ना आपके लिए मुश्किल था। ठीक ऐसे अवसर पर आपने वचन से अगुवाई पाई। हमारे अपने विचारों या सिद्धान्तों की पुष्टि के लिए वचन हमारी अगुवाई नहीं करता पर

जब हम पवित्रशास्त्र के द्वारा परमेश्वर के मन की बातें जानना चाहते हैं तो निश्चय अगुवाई मिलती है।

मसीह को निश्चय था कि पवित्र आत्मा उसके विषय में बोला और बताया, क्योंकि मसीह ने अक्सर पुराने नियम के सन्दर्भों का हवाला दिया और उन परिच्छेदों के बारे में बताया जो उससे सम्बन्धित थे। पवित्र आत्मा की सहायता के बिना हम सत्य अथवा मार्गदर्शन के प्रति चूक जाएँगे। (लूका 4:18 देखें)। अन्यों ने भी इस प्रकार के प्रकाशन का अनुभव किया है (जैसा कि पतरस ने प्रेरितों के काम 2:14-21 में किया)।

मैनुएल, जिसके विषय में आपने इस पाठ के आरंभ में पढ़ा, वह मेरा एक निकट का मित्र है। जो वाणी उसने सुनी थी वह परमेश्वर की वाणी थी, जो उससे यशायाह 52:11 के द्वारा बोल रही थी, हालाँकि इस सन्दर्भ के वचन पहिले किन्हीं और लोगों के लिए कहे गए थे। यह पवित्र आत्मा का एक उदाहरण है कि वह पवित्र शास्त्र के वचनों का प्रयोग बोलने के लिए करता और उस बोले गए वचन को समझाता है।

आपके लिए कार्य

2 मान लीजिए कि आप किसी जन को समझाने का प्रयत्न कर रहे थे कि पवित्र आत्मा हमसे बोलने के लिए पवित्रशास्त्र के वचनों का प्रयोग कर सकता है। आप इसी तरह के अपने जीवन के किसी उदाहरण को अपनी नोटबुक में लिखिए—आप किसी दूसरे के जीवन के उदाहरण या इस पाठ में के उदाहरण को भी लिख सकते हैं।

पवित्र आत्मा, हमारी अगुवाई उन सिद्धान्तों के अनुसार करेगा जो हमें बड़ी स्पष्टता से सिखाए गए हैं। वह स्वयं अपना विरोध नहीं करेगा।

यदि पवित्रशास्त्र के सिद्धान्त हमारी सहायता करेंगे कि हम परमेश्वर की योजना का अनुसरण करें, तब तो हमें यह समझना चाहिए कि ये सिद्धान्त बाइबल में किस रूप में दिए गए हैं। बाइबल, मात्र जीवन के विषय में विचारों का संकलन नहीं है। यह तो परमेश्वर का मनुष्य से और मनुष्य का परमेश्वर से बोलने का अभिलेख है। सिद्धान्त प्रस्तुत किए गए हैं और हम उनके अर्थों को मनुष्यों के जीवन पर उनके प्रभाव के लेखा-जोखा से समझ सकते हैं।

उदाहरण के लिए, मसीह ने दीनता अथवा नम्रता पर अन्तिम विजय पाने का सिद्धान्त सिखाया (मत्ती 5:5)। परन्तु दीनता है क्या? हम मूसा के जीवन-वृतान्त का अध्ययन करने के द्वारा समझ सकते हैं कि यह अन्य गुणों के साथ सन्तुलन बनाए रखने में कार्यकारी होता है (उदाहरण के लिए निर्गमन 12 अध्याय देखें)।

इस्राएल के दो राजाओं दाऊद और शाऊल के जीवनों का अध्ययन करने से हम पश्चात्ताप करने और दुःख भोगने के अन्तर को समझ सकते हैं। यह शाऊल के पाप की महानता के कारण

नहीं था, जो उसके हाथ से राज्य निकल जाने का कारण बना। यह तो वह सच्चाई थी कि उसने दु:खपूर्ण तरीके से व्यवहार किया, परन्तु न तो कभी भी अपने पाप से पश्चात्ताप किया और न ही अपनी बुरी चाल से ही फिरा। इसके विपरीत, दाऊद ने अपने सम्पूर्ण हृदय से पश्चात्ताप किया (उदाहरण के लिए 1 शमूएल 13:8-14; 15:17-25; 2 शमूएल 12 तथा भजन संहिता 51 की तुलना करें)।

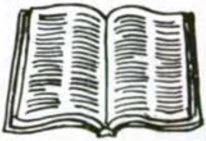

आपके लिए कार्य

3 प्रेरितों के काम 5:40-42 तथा नीचे दिए गए पदों को पढ़िए। प्रेरितों के काम की घटना एक सिद्धान्त का उदाहरण है इन पदों में–

(अ) मत्ती 5:7
(ब) मत्ती 5:11
(स) मत्ती 6:37

हम कह सकते हैं, कि पवित्र आत्मा, सिद्धान्तों के अन्तर्गत हमारी अगुवाई करने हेतु वचन को लागू करता है।

आपके लिए कार्य

4 हमने तीन प्रकार के मार्गदर्शन के बारे में सीखा है जो हम पवित्रशास्त्र के द्वारा पाते हैं। नीचे दिए गए प्रत्येक सन्दर्भ को

पढ़िए और इनका उस विवरण से मिलान करें जो इस मार्गदर्शन का प्रतिनिधित्व करते हैं। रिक्त स्थान में सही कथन का अंक लिखिए।

1) एक व्यक्ति या समूह को सीधा आदेश दिया गया।
2) बर्ताव करने या व्यवहार का सिद्धान्त।
3) किसी के जीवन में सिद्धान्त का एक उदाहरण।

...(अ) यहोशू 6:4
...(ब) मत्ती 5:44
...(स) मत्ती 19:21
...(द) प्रेरितों के काम 7:54-60

परमेश्वर दूसरों के द्वारा बात करता है

परमेश्वर दूसरों को भी अपनी इच्छा बताने हेतु प्रयोग में लाता है। वह ऐसा करने के लिए मसीहियों अथवा ग़ैरमसीहियों को भी इस्तेमाल कर सकता है।

हम उन ढाँचों के अन्तर्गत रहते और काम करते हैं जो अधिकार पर आधारित होते हैं, जैसे सरकार, परिवार, व्यवसाय और कलीसिया। इनमें से प्रत्येक का एक विशेष क्षेत्र में मार्गदर्शन का उत्तरदायित्व है। प्रत्येक की पवित्रशास्त्र द्वारा पुष्टि एक माध्यम के रूप में की गई जिसके द्वारा परमेश्वर बात करता है। उदाहरण के लिए, छोटे बच्चों के माता-पिता उनका मार्गदर्शन करते हैं, और परमेश्वर का वचन कहता है, यह बच्चों के लिए परमेश्वर की इच्छा है कि वे आज्ञाकारी बनें (इफिसियों 6:1)। एक देश के शासकों के पास यह अधिकार है कि वे अपने देश के नागरिकों का ठीक ठीक मार्गदर्शन करें, और परमेश्वर का वचन

कहता है कि यह परमेश्वर की इच्छा है कि शासकों की आज्ञापालन की जाए (रोमियों 13:1)।

इन सम्बन्धों के अतिरिक्त ऐसे लोग भी हैं, जिन्हें परमेश्वर हमारे जीवनों में आने देता है। परमेश्वर के साथ एक लम्बी अवधि तक चलते रहने के कारण ये बुद्धिमान भी हो सकते हैं, बहुधा इनके परामर्श मूल्यवान होते हैं क्योंकि ये परमेश्वर के मार्गों को जानते हैं।

आपके लिए कार्य

5 अपनी बाइबल में से निर्गमन 18:13-26 पढ़िए। अपनी नोटबुक में निम्न प्रश्नों का उत्तर लिखिए।

(अ) मूसा की समस्या क्या थी (पद 13-17)?
(ब) मूसा को यित्रो ने क्या सलाह दी (पद 18-23)?
(स) परिणाम क्या हुआ (पद 24-26)

अन्ततः, राजा दाऊद, इस्राएल की प्रजा की गिनती लेने के कारण पाप में गिर ही गया, क्योंकि उसने योआब के परामर्श पर ध्यान नहीं दिया था (2 शमूएल 24:3-4, 10)। यित्रो और योआब को मूसा और दाऊद पर "अधिकार" नहीं था; वास्तव में मूसा अगुवा था और दाऊद राजा था। परन्तु उनके परामर्श का एक मूल्य था।

परमेश्वर तो स्कूल में दी जाने वाली परीक्षा या जाँच के द्वारा यह दिखाता है कि उसने आपको विशेष वरदान या योग्यताएँ दी हैं। वह स्कूल टीचर के द्वारा भी आपसे बात कर सकता है, क्योंकि टीचर बहुधा विशेष गुणों को पहिचान लेते हैं।

जब हम कोई सलाह प्राप्त करते हैं यदि वह हमसे मेल नहीं खातीं तो क्या होता है? कुछ सलाहों को हमें टाल देना चाहिए क्योंकि ये पवित्रशास्त्र के निर्देश के विरुद्ध होती हैं। उस व्यक्ति पर ध्यान देने की आवश्यकता है जिसने हमको सलाह दी है: हमारे प्रति उसके मन में कैसी भावनाएँ हैं? हमारे अन्दर यह दृढ़-विश्वास होना चाहिए कि परमेश्वर स्पष्टता से बात कर सकता है।

आपके लिए कार्य

6 केनेथ अपना कार्य कठोर मेहनत से करता है और सोचता है कि उसे कार्य के अनुरूप कम वेतन दिया जाता है। वह अपने मित्रों से पूछता है कि क्या करे। इफिसियों 6:5-8 में दिए गए निर्देशों के आधार पर उसे निम्न सलाहों में से कौन सी सलाह नहीं मानना चाहिए।

(अ) कार्ल ने उसे सलाह दी कि कम वेतन के अनुरूप वह कम काम करे और अपने मालिक के जाते ही वह भी चला जाया करे।

(ब) बॉब ने बताया कि उचित होगा कि वह अपने मालिक से बात करके अपनी शिकायत बताए।

(स) जिम ने सलाह दी कि वह कठोर मेहनत करना छोड़कर धीमे काम करे चूँकि उसे अच्छा वेतन नहीं मिल रहा है।

परमेश्वर बीते अनुभवों के द्वारा बात करता है

परमेश्वर के पीछे चलने में पहिले मिली अगुवाई परमेश्वर की वाणी को और भी अधिक स्पष्टता से सुनने में आपकी मदद

करेगी, फिर चाहे वह किसी भी माध्यम से बोलना क्यों न चुने। जब आप अपने बीते जीवन पर विचार करते हैं तो आपने यह जाना कि परमेश्वर विश्वासयोग्य रहा और वह बोला भी। सच्चे मन से परमेश्वर के पीछे चलते रहने में आप अपने जीवन से उसकी वाणी को पहिचान जाते हैं और अपने जीवन में उसकी अगुवाई का अनुभव और भी अच्छी तरह से करते हैं।

इसी प्रकार परमेश्वर ने पवित्रशास्त्र में वर्णित मनुष्यों के जीवन में विशेष सिद्धान्तों के अनुसार कार्य किया। वह आपके जीवन में भी इन्हीं विशेष सिद्धान्तों के अनुसार कार्य करेगा। पहिले तो आप भिन्न-भिन्न रूपों में परमेश्वर के कार्य को अपने जीवन में देख सकेंगे। तब आप परमेश्वर के कार्य करने का एक नमूना पाएँगे। अन्त में, परमेश्वर के पीछे चलने के अपने अनुभव से आप उन सिद्धान्तों को खोज निकालेंगे जिनके द्वारा वह कार्य कर रहा है। नीचे दिया गया उदाहरण इसका एक अच्छा नमूना है।

जब जिम ने बाइबल कॉलेज से अपना प्रशिक्षण पूरा करके उपाधि प्राप्त की, तब दो कलीसियाओं ने उससे कहा कि वह आकर उनका पास्टर बने। उसने प्रार्थना की, बाइबल पढ़ी तथा आत्मिक अगुवों से सलाह ली। कुछ भी स्पष्ट सा प्रतीत न हुआ उसे। यदि वह दोनों में से एक कलीसिया को चुन लेता तो पवित्रशास्त्र के किसी भी सिद्धान्त का उल्लंघन नहीं होता। उसके बाइबल कॉलेज के शिक्षकों ने सलाह दी कि वह दोनों में से एक को चुन ले; एक आत्मिक अगुवे ने परामर्श दिया कि दूसरी वाली कलीसिया को चुने। वह अधिक प्रतीक्षा नहीं कर सकता था और उसे चुनाव करना ही था। अतः उसने निर्णय लिया और कलीसियाओं को सूचित कर दिया।

आश्चर्य की बात तो यह थी कि उसके चुनने का भय उसके समर्पण में दृढ विश्वास के द्वारा बदल गया। उसे निश्चय हो गया कि वह परमेश्वर की इच्छा में था।

क्या जिम ने भाग्य पर भरोसा किया और सही चुनाव किया? नहीं। उसका चुनाव भाग्य पर निर्भर नहीं था...यह तो परमेश्वर की अगुवाई का परिणाम था। क्योंकि उपरोक्त सलाहों के होते हुए भी जिम परमेश्वर की इच्छा पूरी ईमानदारी के साथ करना चाहता था। वह पवित्र आत्मा के अनुसार चलता चला। उसके पास एक परिवर्तित मन था (रोमियों 12:1-2)। उसका निर्णय पवित्र आत्मा की अगुवाई के प्रत्युत्तर में किया गया था जिसमें उसके विवेकपूर्ण ज्ञान का हाथ नहीं था।

कई वर्ष बाद, जिम को फिर एक महत्त्वपूर्ण निर्णय लेना था। उसने पुनः परमेश्वर की ओर देखा, प्रार्थना की, सलाहों को सुना, भिन्न-भिन्न संभावनाओं पर ध्यान दिया। फिर वहाँ, स्वर्ग से कोई वाणी सुनाई नहीं दी। वह फिर ऐसे समय में पहुँच गया, जहाँ वह अधिक प्रतिक्षा नहीं कर सकता था और उसे निर्णय लेना ही था। उसने निर्णय लिया और पुनः उसका भय दृढ़ विश्वास में बदल गया क्योंकि उसने परमेश्वर का अनुसरण किया था।

जिम ने यह महसूस करना आरंभ किया कि परमेश्वर की इच्छा अनुसरण में एक सिंद्धान्त ज्यों का त्यों बना रहा। जब उसने परमेश्वर की ओर बड़ी ईमानदारी से देखा, तो परमेश्वर ने उसकी इस रूप में अगुवाई कि उसे स्वयं निर्णय लेना पड़ा। उसने देखा कि भजन संहिता 37:23 जो सिद्धान्त दिया गया है, "मनुष्य की गति यहोवा की ओर से दृढ़ होती है", यह उसके जीवन में पूरा हुआ था। वह उस पर निर्भर रह सकता था। वहाँ कोई ऐसी वाणी सुनाई नहीं दी जिसे वह पहिचान सकता था और फिर भी परमेश्वर बोल रहा था। जिम का निर्णय परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप सही प्रत्युत्तर था।

आपके लिए कार्य

7 हमने अभी-अभी अध्ययन किया है कि परमेश्वर ने किस प्रकार उस व्यक्ति की अगुवाई की जो उसकी इच्छा पूरी करना चाहता था। आपके जीवन में परमेश्वर ने किस प्रकार अगुवाई की इस बारे में सोचिए। तब नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर अपनी नोटबुक में लिखिए।

(अ) उद्धार पाने में परमेश्वर ने आपकी अगुवाई किस प्रकार से की थी?

(ब) किस प्रकार के लोगों को आपका मार्गदर्शन करने के लिए प्रयोग किया?

(स) परमेश्वर के वचन में किस सन्देश ने आपका विशेष मार्गदर्शन किया?

(द) किन परिस्थितियों को परमेश्वर ने आपको नया बनाने में प्रयोग किया?

(य) क्या आपने अपने जीवन में अगुवाई के किसी नमूने या सिद्धान्त को देखा? वह क्या है?

परमेश्वर सीधे बात कर सकता है

अपने वचन, दूसरे लोगों और बीते अनुभवों के अलावा, परमेश्वर कभी-कभी हमसे सीधे बात करता है। कितनी बार परमेश्वर इस प्रकार से बात करना चुनता है? यदि हम अपने विवेक को इस रूप में लें कि यह परमेश्वर की वाणी का प्रतिनिधि है, तो हम कह सकते हैं कि कितनी ही बार परमेश्वर हमसे सीधे ही बातचीत करता है। स्मरण रखें कि उसका सन्देश, जो वह हमें देता है कभी भी उसका विरोधी नहीं होता जो वह पहले से ही बाइबल में कह चुका है।

आप कैसे जानेंगे कि जो वाणी आप सुनते हैं वह परमेश्वर की ही वाणी है? बाइबल में दो प्रकार की जाँच दी गई है जो एक दूसरे की पूरक हैं और आपस में सन्तुलन बनाए रखती हैं। पहली जाँच आत्मगत है। जैसे एक भेड़ गड़रिये की वाणी पहचानती है (यूहन्ना 10:4), आप भी अपने चरवाहे की वाणी को पहिचानेंगे (यूहन्ना 10:14-15)। जब आपने परमेश्वर की इच्छा जानना चाही थी, तब आपने अपने मन को परमेश्वर के वचन से भरा और पवित्र आत्मा का अनुसरण किया, तब आप जान सकते हैं कि यह तो परमेश्वर का बोलना है।

दूसरी जाँच पहले की जाँच को बल प्रदान करती है : परमेश्वर का निर्देशन सदा उसके अपने लिखित वचन की सहमति में होता है (यशायाह 8:20)।

आपके लिए कार्य

8 प्रेरितों के काम 10:9-33 पढ़िए तथा नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपनी नोटबुक में लिखिए।

(अ) किन दो रूपों में परमेश्वर ने पतरस से सीधे बात की थी (पद 9-16, 19-20)?

(ब) परमेश्वर का सन्देश किस रूप में पूरा हुआ (पद 14, 17-18, 22)?

(स) पतरस ने क्या किया (पद 21-23, 28)?

क्या कारण है कि कुछ लोग परमेश्वर की वाणी नहीं सुनते

विषयवस्तु 2. ऐसे लोगों के उदाहरणों को आपस में मिलाएं जो परमेश्वर के सन्देश को सुनने से वंचित रह गए—उन कारणों की खोज करना कि ऐसा क्यों हुआ।

सामान्यत: दो प्रमुख कारण हैं कि क्यों लोग परमेश्वर की वाणी सुनने अथवा निर्देशन पाने से चूक जाते हैं। एक कारण यह है कि ऐसे लोग परमेश्वर के बोलने के तरीके को ग्रहण नहीं कर सकते। दूसरा कारण है कि जो परमेश्वर ने कहा है उसका उन्होंने पालन नहीं किया।

परमेश्वर के तरीके का तिरस्कार

इब्रानियों 1:1-3 हमें बताता है कि परमेश्वर पहले जिस तरह मनुष्य से बोला अब उसने वह तरीका बदल दिया है। मसीह के आगमन के पूर्व तक वह हमारे पूर्वजों और नबियों के द्वारा बोला।

परन्तु उसने इस तरीके से बोलने को अब अपने पुत्र द्वारा बोलने से बदल दिया। **परमेश्वर कौन था** यह पूर्णरूपेण यीशु मसीह में विद्यमान है। परन्तु, चूंकि लोगों ने इस तरीके (यीशु मसीह) को ग्रहण नहीं किया इसलिए वे उस सन्देश से वंचित रह गए।

नामान एक बड़ा सेनापति था, वह प्रत्येक बात में एक सफल व्यक्ति था (2 राजा 5 देखें)। परन्तु उसके जीवन में एक अभिशाप था: उसे कोढ़ था, एक भयंकर बीमारी। परमेश्वर ने उससे बातचीत करने के लिए विभिन्न माध्यमों का इस्तेमाल किया और अन्त में उसे एलीशा नबी के पास जाने के लिए उभारा। नामान सोचता था कि स्वयं एलीशा आकर उससे बात करेगा, इसके विपरीत एलीशा का नौकर सन्देश लेकर आया (पद 9-12)। नामान के मन में सन्देश के प्रति शंका थी, क्योंकि वह सन्देश एक सन्देशवाहक लाया था, यह उसे अच्छा नहीं लगा। परन्तु जब उसने सन्देश को माना और उसके अनुसार किया तो वह चंगा हो गया (पद 13-14)।

कभी-कभी परमेश्वर बोलने के ऐसे तरीके इस्तेमाल करता है जिनके हम अभ्यस्त नहीं होते। यह तो परमेश्वर होने के नाते उसका अधिकार और विशेषाधिकार है। जो माध्यम वह प्रयोग में लाता है उसके कारण उसके सन्देश को सुनने व समझने से वंचित न रहें।

अनाज्ञाकारिता

दूसरा, कुछ लोग अनाज्ञाकारी होने के कारण परमेश्वर की अगुवाई पाने और उसकी वाणी को सुनने से चूक जाते हैं। हमने (पाठ 2) पहिले ही कहा कि परमेश्वर की वाणी सुनने के लिए आज्ञाकारी होना अति आवश्यक है। परन्तु अब फिर उस सिद्धान्त को दोहराता हूँ।

गिदौन, इस्राएल को गुलामी से छुड़ाने हेतु एक फौज़ तैयार कर रहा था। वह परमेश्वर से इस कार्य के संचालन हेतु आदेश ले रहा था। यदि उसने किसी भी समय आज्ञा का पालन न किया होता तो वह फिर परमेश्वर से यह अपेक्षा नहीं कर सकता था कि वह उसे अपने कार्य की योजना बताना ज़ारी रखे। परन्तु जैसे-जैसे एक-एक क़दम पर गिदौन परमेश्वर के आदेशों का पालन करता रहा वैसे-वैसे दूसरे क़दम के कार्य के प्रति उसे सन्देश प्राप्त होता रहा। अन्त में उसके पास चुनिन्दा तीन सौ पुरुषों की फौज़ थी, जिन्होंने हज़ारों मिद्यानियों को मौत के घाट उतार डाला (न्यायियों 7:1-25)।

गिदौन का अनुभव हमें इस सलाह का सुझाव देता है: यदि निर्देश पाने के लिए आपको परमेश्वर की वाणी सुनने में कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है, तो परमेश्वर के वचन में से खोज कीजिए कि आप कहाँ पर असफल रहे?

आपके लिए कार्य

9 व्यक्ति जो परमेश्वर की अगुवाई पाने में चूक गया उसके विवरण का उस कारण से मिलान कीजिए कि उसने ऐसा क्यों किया।

1) माध्यम का तिरिस्कार करने के कारण

2) अनाज्ञाकारिता के कारण

...(अ) ओलाव जानता है कि वह उस मित्र को क्षमा करे जिसने उसके साथ बुरा व्यवहार किया, परन्तु ओलाव ने ऐसा नहीं किया। अब उसे लगता है कि आगे के जीवन में निर्देश पाने के लिए उसकी प्रार्थना का उत्तर उसे नहीं मिलता है।

...(ब) दान परमेश्वर की अगुवाई पाने को आतुर था। उसके माता-पिता भी प्रार्थना किया करते थे कि दान को सही अगुवाई मिले कि वह आगे क्या करे। उन्होंने उसे सलाह दी कि वह एक वर्ष तक काम करके आगे प्रशिक्षण लेने हेतु पैसा बचाए। परन्तु दान ने उनकी सलाह को ठुकरा दिया, उसने यह अपेक्षा नहीं की थी कि परमेश्वर उसके माता-पिता के द्वारा उससे बोलेगा।

...(स) लिन्डा सोचती थी कि वह जानती है कि अब परमेश्वर उससे क्या चाहता है कि वह करे। वह जानती थी कि परमेश्वर चाहता है कि अब वह एक बाइबल कक्षा को पढ़ाने के द्वारा सहायता करे, परन्तु फिर भी उसने ऐसा नहीं किया।

आश्वासन कि परमेश्वर बात करेगा

विषयवस्तु 3. उन सच्चाइयों पर मनन करना जो यह आश्वासन देती हैं कि परमेश्वर आपसे बात करेगा।

जो जन परमेश्वर की इच्छा पूरी करना चाहता है उसे इसलिए भयभीत होने की आवश्यकता नहीं कि वह परमेश्वर की वाणी सुनने में समर्थ नहीं है। बात करने और बताने की सामर्थ हम पर निर्भर नहीं होती, परन्तु यह तो परमेश्वर पर निर्भर है।

परमेश्वर बोलता है; वह आपसे बोलेगा। इसके लिए आपको दृढ़ विश्वास होना चाहिए। बाइबल में असंख्य ऐसे प्रमाण मौजूद हैं कि परमेश्वर बोला और सुना गया बल्कि उस समय भी जब मनुष्य उसकी वाणी नहीं सुन रहे थे (उदाहरण के लिए योना को, योना 1:3 में तथा शाऊल को, प्रेरितों के काम 9:1-6 में लीजिए)। वह निश्चय ही उससे बोलेगा जो उसकी सुन रहा है।

आपके लिए कार्य

10 नीचे दिए गए पवित्रशास्त्र के परिच्छेदों को पढ़ें और मनन करें। नीचे दिए गए प्रत्येक प्रश्न का उत्तर अपनी नोट बुक में लिखिए।

(अ) भजन संहिता 19:7-11 : परमेश्वर की व्यवस्था या वचन हमें क्या देता है (पद 11)?

(ब) भजन संहिता 23:1-3 : परमेश्वर क्यों हमारी अगुवाई करता है (पद 3)?

(स) भजन संहिता 25:8-10 : परमेश्वर हमें क्यों सिखाता है (पद 8)?

अपने उत्तरों को जांच लें

6 वह इनकार (तिरस्कार) कर देगा
(अ) कार्ल की सलाह, और
(स) जिम की सलाह। क्या आप बता सकते कि क्यों?

1 यह उसको प्रत्येक भले काम करने में लगाए रखेगा। (या इसी तरह का उत्तर।)

7 आपके उत्तर। मुझे आशा है कि इन प्रश्नों के उत्तर आपकी सहायता करेंगे जबकि आप अपने जीवन में परमेश्वर की अगुवाई पाने के लिए प्रयत्नशील हैं।

2 आपका उत्तर। आपने मैनुएल के अनुभव का वर्णन किया होगा अथवा ऐसी ही बात कभी आपके जीवन में भी घटी अथवा किसी के अनुभव को आप जानते हैं।

8 (अ) दर्शन के द्वारा (पद 10-16) तथा वाणी के द्वारा (पद 13, 15, 19)।

(ब) पतरस ने परमेश्वर की वाणी को पहिचान लिया (पद 14) तथा परिस्थितियों ने इसे प्रमाणित किया (पद 17-18, 22)।

(स) उसने परमेश्वर की वाणी का पालन किया (पद 23) तथा उन्हें ग्रहण किया, जिन्हें परमेश्वर ने ग्रहण करने को कहा था (पद 28)।

(आपके उत्तर इसी प्रकार के होने चाहिए। यह घटना परमेश्वर द्वारा सीधी बातचीत करने का एक अच्छा उदाहरण है।)

3 (ब) मत्ती 5:11

9 (अ) अनाज्ञाकारिता–(2)

(ब) माध्यम का तिरस्कार–(1)

(स) अनाज्ञाकारिता–(2)

4 (अ) (1) एक व्यक्ति या समूह को सीधा आदेश दिया गया।

(ब) (2) व्यवहार (बर्ताव) का सिद्धान्त।

(स) (1) एक व्यक्ति या समूह को सीधा आदेश दिया गया।

(द) (3) किसी के जीवन में सिद्धात का एक उदाहरण।

10 (अ) यह हमें ज्ञान या चेतावनी देता है।

(ब) वह अपने नाम के निमित्त अगुवाई करता है अथवा अपनी प्रतिज्ञा पूरी करता है।

(स) वह हमें सिखाता है क्योंकि वह भला और धर्मी है। (अथवा इसी तरह का उत्तर।)

5 (अ) वह स्वयं ही सब लोगों का न्याय कर रहा था और यह कार्य उसके अपने लिए बहुत बड़ा था।

(ब) यित्रो ने उसको सलाह दी कि अपने लिए योग्य पुरुषों को चुन ले कि वे तेरी सहायता करें।

(स) पुरुषों की नियुक्ति की गई और समस्या का हल हो गया; अब मूसा पूरी रीति से इस्राएलियों की अगुवाई करने में समर्थ था।

(आपके उत्तर इसी प्रकार के होने चाहिये।)